दुनियाँ ईश्वर के खेल का रंगमंच है - इसमें हमारी ज़ात और जमात का मुक़ाम

महात्मा रामचंद्र जी महाराज ने एक जगह लिखा है - " हे परमपिता परमात्मा यह सेवक जैसा है तैसा आपकी शरण में मौजूद है . इसको ख़बर नहीं कि आपके गुण कैसे गाये जावें. कभी-कभी अपनी बाख़बरी पर नाज़ (सचेत दशा पर गर्व) हो जाता है लेकिन जब काम का बक्त आता है, तो यह सब धरे का धरे रह जाता है. अब तक छान-बीन करने का नतीज़ा यह निकला और यह जान पाया कि " कुछ नहीं जाना ".

" दुनियाँ के हर हिस्से में इल्म (विद्या) का शोर मचा हुआ है. लाखों- करोड़ों किताबें लाइब्रेरिओं में भरी पड़ी हैं. हज़ारों अख़बार और रिसाले हर मुल्क के कोनों से रोज़ाना, हफ्तेबार और माहवारी निकल रहे हैं. हर ख़ास और आम की नज़रों में समाकर, ज़बानों पर चढ़कर, ज़हंनो (मस्तिष्क) में उतर जाते हैं और कुछ रोज़ हाफिज़े (स्मरण) की कोठरीओं में बंद रहकर फिर न जाने कहाँ से कहाँ चले जाते है, कि याद करने पर भी याद नहीं आते और अगर याद आ भी जाएँ तो बे सिर-पैर के, किसी काम के नहीं कहाँ से आते हैं और कहाँ ग़ायब हो जाते हैं ? क्या यह सब आपके नाम और रूप के नज़्ज़ारे तो नहीं हैं जो आपके ज्ञान के समुद्र से लहरों की शक्ल में उठते और फिर लुप्त हो जाते हैं ? "

" ज्ञान-अज्ञान, प्रकाश, अन्धका , विद्या-अविद्या, जड़, चैतन्य, मौत, ज़िंदगी, ताक़त, कमज़ोरी, वगैरा -वगैरा ये सबके सब आपकी माया के खेल तमाशे हैं. दुनियाँ एक तमाशे की जगह - रंगमंच है. सब लोग एक्टर, यानि अभिनेता हैं और आपस में एक दूसरे का खेल देखने वाले हैं. कुछ लोग खेल खेल रहे हैं, तो कुछ उन खेलों को देख रहें हैं और कुछ इन खेले हुए खेलों की नक़ल उतारने में बदमस्त (संलग्न) हैं . बहुत सी तादाद (संख्या) लोगों के इन नक़ली खेलों को देखकर ऐसी मस्त और महब (तल्लीन) है कि उनके आनंद का ठिकाना नही. यह चक्र ऐसा घूम रहा है कि न मालूम कब ख़त्म होगा ? मुमकिन है कि महाप्रलय या क़यामते कुब्रा इस चक्र की आखिरी हरक़त या ठहराव के दिन का नाम हो.

" जो इस संसार से चले गए, सब मुक्त हस्तियाँ अपना-अपना खेल दिखा कर और थक-थका कर एक कौने में बैठीं हैं और ऐसे ख़ामोश और छुप कर बैठे हैं कि लौटकर ख़बर तक न ली, ऐसे गुमनाम हुए कि किसी का नामोनिशान तक बाकी नहीं. क्या हुआ अगर उँगलियों पर गिने-गिनाये महापुरुष, ऋषि-मुनि पीर-पैग़म्बर, अवतार-औलिया,अपने-अपने कारनामों या हिदायतों (कृतियों -उपदेशों) के नाम और रूप में अब तक याद करने वालों को अपनी झलक दिखा देते हैं. उनका साया रुपी नाम और रूप जब तक कि ईश्वरीय प्रकाश बाकी है, क़ायम रहेगा. पर साया तो साया ही है. नक़ल की हैसियत और उम्र भला कितनी ?

" ऐ परमात्मा ! ये बन्दा भी ऐसी हस्तियों की कितनी नक़लों की नक़ल और असलियत के किसी मुक़ाम की असल का साया और परमात्मा की सिफ़ात का मजमुआ (गुणों का समूह) आपकर मुक़र्रर किये हुए नियमों के अनुसार पार्ट अदा

कर रहा है. आप सबके हृदय की जानने वाले हैं इसलिए आप पर ही छोड़ता हूँ कि आप ख़ुद ही फैसला कर लें कि सेवक का खेल कितना असली है और कितना नक़ली, और अगर नक़ली है तो हस्ती की किस असल की नक़ल. मुझको पक्का विश्वास है कि आपकी दया और कृपा की लहरों और मौंजो ने आपसे दूर पड़े हुए शरीर को चारों तरफ़ से इस दुनियाँ में पहले ही दिन से ढाँप रखा था और सबसे पहले हिदायत (आदेश) की रौशनी मुझपर मेरी परमभक्त माता की पवित्र गोद में डाली गयी, जिस प्रकाश की हरारत (गरमी) ने सात वर्ष तक पाला पोसा.

" हे परमदयालु ! आपके रहम (दया) ने मुझको बहुत दिनों तक बे हिदायत नहीं छोड़ा बल्कि उम्र के उन्नीसवें साल में एक मुबारिक दिन ऐसा हुआ कि तमाम हस्ती को हमेशा के लिए एक मुजस्सिम रहीम

(मूर्तिमान दयालु) पंथ के दिखलाने वाले, ज्ञान और विज्ञान के दीपक के सुपुर्द कर दिया. इस सच्चे रास्ते को दिखलाने वाले ने पहले ही दिन मेरे कान में फूंक दिया कि तेरी हस्ती पहले ही दिन से असलियत की तरफ़ मायल (झुकी हुई) है. इसलिए तू अपने आपको यानी असल को असल करके दिखला. नकल तो असल की कर और नक़ल की नक़ल इस तरह कर कि नक़ल या साये को औज़ार (हथियार) बना. स्वांग रचने में माया की मदद ले और सहारा ज़ाते मुतलक़ (सर्वेश्वर) का ले .

" मेरे रहनुमा (पथ प्रदर्शक) ने ऐसा इशारा देकर मुझको सिर्फ़ मेरे ऊपर ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि ख़ुद साये (छाया) की तरह हर वक्त साथ रहकर, सोलह बरस तक अपनी ख़ास तवज्जह -ज़ाहिरी और अन्दरूनी - से मेरी निगाहेदाश्त फ़रमाई (अर्थात प्रकट व अप्रत्यक्ष विशेष कृपा की चौकसी की). पंथ के बाहरी आडम्बरों से अलहदा रहने के लिए हमेशा हिदायत फ़रमाई और आख़िरकार अपने रंग में रंग-रंगा कर यह हुक्म फ़रमाया कि हमारा मिशन जिस तरह और जहां तक हो सके दुनियाँ के लोगों तक पहुंचाया जाए.

" आपकी मंशा यह थी कि गिरे हुए जीवों और भूले भटके संसारियों को उभारा जाए और उनकी हालत को संभाला जाये. आपका फ़रमान यह था कि जब तक लोगों की अन्दरूनी (आन्तरिक) हालत न सम्भलेगी, उनकी भीतरी शक्तियों का उभार होकर वे जाग न जाएँगी और मन की ताक़तें फिर से नशवोनुमा (वकासित) न होंगी और न फूलें फलेंगी, बुद्धि तेज़ होकर शुद्ध न होगी और सच्चा ज्ञान प्राप्त न होगा उस वक्त तक ख़ाली पूजा-पाठ और ऊपरी उपासना से काम न चलेगा और जीव जैसे इस हाल में बंधे हुए हैं वैसे ही फंसे रहेंगे.

" इसलिए आपने हमेशा इस बात पर ज़ोर दिया कि जहाँ तक बन सके अन्दर का अभ्यास किया और कराया जाए और इसके साथ सब धर्म सम्बन्धी उसूलों (नियमों) की पाबंदी की जाए. यम-नियम , जायज़ और नाजायज़ तरीक़ों और अमलों, धर्म-अधर्म के व्यवहारों पर पूरा ख़्याल रखा जाये जिससे इख़लाक़ (चरित्र) सुधर . स्वाध्याय से मौक़ा -ब-मौक़ा फ़ायदा उठाया जाये . अंतर का अभ्यास करने वालों का सत्संग किया जाये तभी ज़ाहिरी और अंदरूनी (आंतरिक) तरक़्क़ी मुमकिन है.

" इसके खिलाफ़ (विपरीत) अगर दुनियाँ के उन पन्थाइयों की रीस (नक़ल) उतारी जायगी और अमल करेंगें जो महज़ तितली बनकर किताबें पढ़ लेते हैं या बुज़ुर्गों, महापुरुषों का हाल सुनकर अपने दिल का इत्मीनान हासिल कर लेते हैं और अंदरूनी (आंतरिक) अभ्यास कुछ नहीं करते, उनका अभ्यास सिर्फ़ थोड़ी देर किताबों का पाठ करना और भजन कीर्तन करके शब्दों को गाकर, अपनी तबियत को बहलाना है, तो फिर जिसका काम असली मक़सद (ध्येय) तक पहुँचना है, कोसों दूर हो जायेगा.

" आपके हुक्म और उसूलों की पाबन्दी का हमेशा ख्याल रखा गया और यही वजह है कि हमारे प्रेमियों की तादाद बहुत थोड़ी है. दुनियाँ के लोग चाटक-नाटक, ऊपरी खेल-तमाशों और माया की झलक के भूंखे हैं. उनके लिए सिर्फ़ भीतरी अभ्यास एक भारी बोझ है. अपनी पुरानी आदतों को तब्दील करके धर्म सम्बन्धी इख़लाक़ पर आ जाना बहुत ही बोझिल काम हो गया है, भागने और मुंह छिपाने की कोशिश करते हैं. कितने ही भाग गए और न जाने कौन - कौन भागने को तैयार हैं.

" हमारी थोड़ी सी तादाद (संख्या) जो अब तक क़ायम नज़र आती है किस क़दर शानदार और वज़नी है, इसका मुक़ाबला दूसरी जमात (संस्था) के सदस्यों से वो ही साहब कर सकते हैं जो अहले नज़र (परमार्थ दृष्टि संपन्न) और इस मार्ग के सन्तों की सौहबत उठाये हुए हैं. यही वजह है कि इतनी मुद्द्त में भी यह जमात कोई नुमाया और नामवर जमात (प्रसिद्ध संस्था) नहीं बन सकी. न इसका कोई ज़ाहिरा वज़ूद (अस्तित्व) है , न कोई ईमारत, न कोई तहरीरी उसूल (लिखित नियम) और न कोई फण्ड है.

यही वजह है कि इबददायी उसूल (प्राम्भिक नियमों) और मंशा के ख़िलाफ़ जहाँ तक भी हो सका अमल दरामद करने की ज़ुर्रत (चेष्टा) नहीं की गयी है और अपनी इस जमात यानी संगत को (बाद में पूज्य लालाजी महाराज द्वारा स्वयं संस्थापित रामाश्रम सत्संग को) हमेशा माया और मायावी झगड़ों से अलहदा रखा गया है .

राम सन्देश : सितम्बर-अक्टूबर , २००३